सहारा

(पुस्तक के कुछ अंश)

कहते वक़्त हमेशा एक-सा नही होता है, "कभी अच्छा कभी बुरा ओर कभी बहुत बुरा भी"

शायद मनोहर ने कभी नही सोचा था की 19 साल के बाद उसका वक़्त क्या होने वाला है?

बचपन मे एक के बाद एक मिली ठोकर से प्रभावित उस नन्हे से बालक के मन की ना जाने कितनी इच्छाओं को मन मे ही दबा लिया, माता-पिता के चले जाने के बाद रिश्तेदारों ने उसे अनाथाश्रम को सौपकर अपनी जिम्दारियों को पूर्ण कर लिया,

मगर शायद किसी ने ये नही सोचा कि उस बालक को सबसे ज्यादा किस की जरूरत है।

नन्हा सा बालक माता - पिता की कमी तो महसूस कर रहा था मगर वक़्त के इस संघर्ष में तकलीफो का दौर चला जा रहा था। आगे.....

सरकारी नौकरी की सबसे अच्छी वेबसाइट- JobSarkari.com

कहते वक़्त हमेशा एक-सा नही होता है, "कभी अच्छा कभी बुरा ओर कभी बहुत बुरा भी"

शायद मनोहर ने कभी नही सोचा था की 19 साल के बाद उसका वक़्त क्या होने वाला है?

बचपन मे एक के बाद एक मिली ठोकर से प्रभावित उस नन्हे से बालक के मन की ना जाने कितनी इच्छाओं को मन मे ही दबा लिया, माता-पिता के चले जाने के बाद रिश्तेदारों ने उसे अनाथाश्रम को सौपकर अपनी जिम्दारियों को पूर्ण कर लिया,

मगर शायद किसी ने ये नही सोचा कि उस बालक को सबसे ज्यादा किस की जरूरत है।

नन्हा सा बालक माता - पिता की कमी तो महसूस कर रहा था मगर वक़्त के इस संघर्ष में तकलीफो का दौर चला जा रहा था।

दिन के समय एक कोने में घंटो बैठा रहना तो कभी रात में डर से उठ जाना, माता पिता के साथ गुजरी हुई यादें मनोहर ने अपने मन मे संजोयी हुई थी, मानो उन यादो को याद करके वह अपने मन के घावों को भर रहा हो।

युही दिन गुजरने लगे ,लेकिन मनोहर की चुप्पी अभी भी ऐसे ही बनी हुई थी।

आश्रम के मुंशी जी के रिटायर होने का समय आ गया था, वो दिन उनका आखरी कार्य का दिन था, हमेशा की तरह अपने काम मे लगे थे कुछ कर्मचारियों के छुट्टी पर होने के कारण वे स्वयं आश्रम के कार्य पूर्ण करने में लगे हुए थे।

दिन में भोजन के वक़्त सभी बच्चो को कतारबद्ध करके भोजन परोसा जाता था, आज मुंशी जी भी उनके साथ भोजन करने के लिए आ गए।

मनोहर अपने स्वभाव स्वरूप वही कोने में बैठा हुआ था, मुंशी जी की नज़र उस पर पड़ी ,

रोज़ आफिस के कार्य मे इतना समय नही मिलता था कि वो बच्चो के साथ समय बिता पाए,

मुंशी जी उठकर मनोहर के पास गए और उससे खाना खाने के लिए चलने को कहा।

मनोहर के कानों में ये शब्द माँ के बाद शायद किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा कहा गया था, उसकी आँखों मे शायद नई उम्मीद से जगी, अपने आंसू पोछने के बाद वो मुंशी जी द्वारा बढ़ाये गए हाथ को थाम कर भोजन करने के लिए उठा।

सरकारी नौकरी की सबसे अच्छी वेबसाइट- JobSarkari.com

इतने दिनों में पहेली बार मनोहर ने सबके साथ खाना खाने बैठा था।

मुंशी जी ने उसे अपनी ही थाली से खाना खाने के लिए कहा, शायद वो किसी ओर के द्वारा खुद को संभोधित होने की प्रतीक्षा ही कर रहा था।

मनोहर को कुछ ही क्षणों में मुंशी जी के प्रति एक लगाव सा हो गया था, जैसे कि उसे उनमे अपने माता पिता का स्वरूप मिल गया हो, इसलिए उनके कहने पर उस आश्रम में पहली बार मनोहर ने पेट भरकर खाना खाया।

शाम को मुंशी जी का सम्मान करने उस आश्रम के ट्रस्ट के लोग व कुछ अन्यजन आये, कुछ देर बाद उनका सत्कार होने पश्चात, बच्चो द्वारा दिये गए उपहारों को ग्रहण करने लगे

मनोहर के पास पहुचने पर मनोहर की तरफ स्नेहभरी नज़रो से देख कर उससे पूछ लिया की "मेंरे लिए क्या लाया मनु?"

उस दिन मनु के पास देने के लिए कुछ नही था मगर उसने अपनी कमीज़ की जेब मे हाथ डाला और एक गेहू का दाना मुंशीजी के हाथ मे रख दिया।

मुंशीजी ने उस एक दाने को भी सहर्ष स्वीकार कर लिया।

सभी लोगो से विदा लेने के बाद मुंशीजी वहाँ से अपने घर के लिए निकल गए, हालांकि उनके परिवार में उनका एक बेटा ओर बहु ही थे जो मुंशीजी से अलग दूसरे शहर में रहते थे।

मुंशीजी ने रात को सोने से पहले उस दाने को एक गमले में बो दिया और रात भर उन्हें मनु का विचार आता रहा, उधर आश्रम में मनोहर अपने पहले वाले हालातो में पुनः आ चुका था, उसे अब इस बात का अफसोस था कि मुंशीजी से वह अब कभी नही मिल पायेगा।

मगर सच ही था वक़्त कब किस ओर पलटी मार दे कुछ कहा नही जा सकता है।

रातभर मनु को लेकर मुंशीजी सो नही सके, उस बालक की छवि जैसे उनके हृदय में छप चुकी थी, रात के 3 बजे अपने बड़े से मकान के दूसरे माले पर गए एक कमरा खोल कर उसमें एक अलमारी से पुरानी एल्बम को निकाल उसमे अपनी पत्नी और बालक के साथ बिताए हुए क्षणों की पुनराव्रती करने लगे, पत्नी की मृत्यु के बाद वो पहली बार इस कमरे में आये जो उनके बेटे का हुआ करता था, शायद वो मनु में अपने बेटे की कल्पना कर रहे थे, ओर कुछ समय के बाद उन्हें वह कब नींद आ गयी, पता ही न चला।

सरकारी नौकरी की सबसे अच्छी वेबसाइट- JobSarkari.com

प्रातः रोज़ के कार्य करने के बाद वो आश्रम जाने के लिए तैयार हुए, हालांकि वो जानते थे कि उनका वहाँ कार्य समाप्त हो चुका है।

आश्रम पहुचते ही वहां खड़े चोकीदार ने उनसे हास्यास्पद ढंग से पूछ लिया की "मुंशीजी आपका यह आना कैसे हुआ"?

मुंशीजी के चेहरे पर छोटी सी मुस्कान थी और जवाब था कि एक आखरी काम बाकी रह गया...!

चूँकि 35 वर्ष इस आश्रम में कार्य करने के बाद वो हर चीज़ के बारे में जानते थे।

अपनी कुर्सी पर बैठे हुए एक जवान युवक को देखकर उन्हें अपना पहला दिन याद आ गया।

डायरेक्टर के पास जाकर उनसे कुछ चर्चा में व्यस्त हो गए और थोड़ी देर के बाद आश्रम के इंचार्ज को मनोहर को लाने के लिए कहा।

मनोहर वही कोने में बैठा हुआ था, इंचार्ज उसे लेकर डायरेक्टर के कक्ष में लेकर पहुँचा, मुंशीजी पर उसकी नज़र पड़ते ही मानो उसे एक नई उम्मीद दिखाई दी, चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान के साथ वो उनके पास आ गया, मुंशीजी ने उसके कन्धे पर हाथ रखा और पूछा कि "मनु..मेरे साथ चलोगे?"

मनु शायद यही चाहता था और उसने अपनी हा में सर हिला दिया।

कुछ कागजी कार्यवाही के बाद मुंशीजी मनु को अपने घर ले आये, शाम हो चली थी,तो मुंशीजी खाना बनाने के लिए रसोईघर में चले गए, कुछ देर में मनु भी उनके पास गया ओर उन्हें वही खड़ा रहकर देखता रहा, अतः मुंशीजी ने उससे पूछा कि क्या देख रहा है?

मनु ने उत्तर में कुछ नही कहा और बाहर की खिड़की के पास में आकर बैठ गया। खाना बन चुका था दोनों ने खाना खाया और फिर मनु से बात करने के लिए उसके पास आ गए।

मनु से उनकी पहली बार बात हो रही थी, ओर फिर दिन इसी तरह निकलते रहे।

मुंशीजी की पत्नी ने एक ज़मीन खरीदी हुई थी ,उम्र के उस पड़ाव पर आने के बाद मुंशीजी से ज्यादा भागदौड़ तो हो नही सकती थी इसलिए उस जमीन को बेच कर उन्होंने उसके पेसो को बैंक में स्थाई जमा करवा दिया, उनके बेटे ने तो उनसे पहले कह दिया था कि उसे अपने पिता से कुछ नही चाहिए।

सरकारी नौकरी की सबसे अच्छी वेबसाइट- JobSarkari.com

मनु को स्कूल में दाखिला करवा दिया, ओर मनु के जीवन मे नई सुबह हुई, पड़ने में तेज इस बालक ने मुंशीजी पर एक गहरा प्रभाव छोड़ दिया।

10 वर्ष के बाद मुंशीजी अस्वस्थ रहने लगे और मनु पर अब जिम्मेदारी बढ़ गयी, हालांकि उसने अपने काबिलियत के आधार पर MBBS में दाखिला पा लिया, लेकिन उसका मुंशी जी को छोड़ कर जाने का मन बिल्कुल नही था, इसलिए उसने ये बात मुंशीजी को बता दी।

यह सुनकर वो बड़े नाराज़ हुए ओर कहा कि @इसी दिन के लिए मेने तुम्हे बाद किया और हाथ आये अवसर को तू ऐसे ही गवा रहा है"

मुंशीजी की जिद के आगे मनु की एक न चली और उसे पढ़ाई पूरी करने उन्हें अकेले छोड़ कर जाने के लिए तैयार होना पड़ा।

अंतिम दिन शाम को खाना खुद मुंशीजी ने बनाया , मनु बाहर कुछ कम के लिए गया था, जब वापस आया तो खाना तैयार था ओर वो उसकी पसंद का ही खाना था।

मुंशीजी ने मनु से कहा की कल से तुझे घर का खाना नही मिलेगा इसलिए आज मेने बना दिया।

मनु 13 बरस पहले वाला वो दिन याद आ गया जब पहली बार उनके हाथ का खाना खाया था और आज भी वही स्वाद से खाना बना।

खाना खाने के बाद मनु को एक लिफाफा देते हुए कहा कि जब में इस दुनिया मे ना रहू तब इसे खोल लेना।

मनु को एक बड़ा झटका लगा कि 13 बरस पहले माता पिता की कमी जिस इंसान ने पूरी की आज जाने की बात सुनकर उसे बड़ी तकलीफ पहुची।

अगले दिन मनु मुंशीजी से विदा लेकर चला गया।

रास्ते भर उसे पिछले 13 साल की मुंशीजी के साथ बिताया हुआ समय याद आ रहा था।

कॉलेज की पढ़ाई शुरू हो गयी थी, मनु कभी भी मुंशीजी से बात करना नही भूलता था।

वक़्त निकलता गया 2 साल में बस कुछ दिन वो मुंशीजी के साथ बिता पाया, उनकी तबियत अब पहले जैसी नही रहती थी इसलिए वो स्वयं एक बार मनु से मिलने के लिए उसके कॉलेज आ गए, उनको वहा देखकर मनु के चेहरे पर ठीक वैसी ही मुस्कान थी जैसी की उस दिन आश्रम में दिखी थी।

सरकारी नौकरी की सबसे अच्छी वेबसाइट- JobSarkari.com

मनु ने अपने होस्टल में ही उनको ठहराया 2 दिन मनु के साथ बिताने के बाद उन्होंने मनु से कहा कि मुझे एक बार अपने बेटे से मिलना है जो उसी शहर में था।

मनु, मुंशीजी को लेकर उनके बेटे के घर ले गया, दरवाजे की घंटी बजाई तो एक सुंदर सी युवती ने दरवाजा खोला, मुंशीजी ने अपना परिचय दिया तो उस लड़की ने उन्हें "दादाजी" कहकर संबोधित किया।

मुंशीजी अपनी पोती से पहली बार मिले थे , उनका बेटा ओर बहु तो उन्हें उस दिन भी न मिले मगर पोती ने उन्हें वही रोक लिया, मनु का कॉलेज था तो मुंशीजी से विदा लेकर वो वह से चला गया।

अगले दिन 25 वर्ष के बाद उनकी मुलाकात अपने बेटे से हुई जो वास्तविकता में मात्र एक साधारण मुलाकात थी।

मगर अपने पुत्र को देख कर वे बड़े खुश हुए और सभी लोगो को आशीर्वाद देकर मनु के पास लौट आने के लिए ऑटो के लिए सड़क के पास आ गए, मगर कुछ देर में उनकी पोती अपनी गाड़ी से उनके पास आई और उन्हें आदर पूर्वक गाड़ी में बैठा लिया।

रास्ते से उनकी पोती गीतांजलि ने उनके लिए काफी सारी चीज़ें खरीदी ओर फिर मनोहर के होस्टल पास आकर उसका इन्तेज़ार करने लगे।

मुंशीजी ने मनु के बारे में गीतांजलि को सब बता दिया था जिससे वह बहुत प्रभावित हुई थी।

मनु से मिलने के बाद पुनः अपने घर लौट आये।

कुछ दिन ऐसे ही निकल गए ,रोज़ की तरह मनु ने आज भी मुंशीजी को फ़ोन लगाया मगर आज लगातार फ़ोन करने के बाद भी उधर से कोई उत्तर प्राप्त नही हुआ।

परेशान मनु ने जोशी जी, जो कि पड़ोस में रहते थे उन्हें फ़ोन लगाया ओर पता लगाने को कहा कि क्या बात है?

कुछ देर इतंज़ार के बाद मनु के फ़ोन की घंटी बजी ओर उत्सुकतावश उसने फ़ोन उठाया, मगर इस बार जोशी जी ने बताया कि मुंशीजी अब नही रहे, मेडिकल का छात्र होने की वजह से उसने एक बार पुनः अच्छे से देखने के लिए कहा मगर इस बार भी उत्तर वही मिला।

मनु के जीवन मे मानो एक ऐसा तूफान आया जिसमे वो बुरी तरह फँस गया हो।

सरकारी नौकरी की सबसे अच्छी वेबसाइट- JobSarkari.com

रोते हुए मनु को दोस्तो ने संभाला , कुछ देर के बाद मनु ने मुंशी जी के बेटे को फ़ोन लगाया, लेकिन फ़ोन गीतांजलि के उठाया , अपने दादा की मृत्यु की समाचार प्राप्ति उसके लिए भी बहुत बड़ा सदमा था, माता पिता किसी मंत्री की पार्टी में शरीक होने के लिए दूसरे शहर गए हुए थे , 50 से ज्यादा फ़ोन लगाने पर भी उत्तर न मिलने पर वो ओर मनु दादाजी के घर चले गए , रास्ते भर में गीतांजलि का फ़ोन बस अपने पिता से संपर्क करने में लगा रहा।

2 दिन के बाद भी पिता को समय नही मिला कि वो ये पूछ लें कि मेरी बेटी इतने फ़ोन क्यों लगा रही है।

मुंशीजी को अंतिम अग्नि मनु के द्वारा प्राप्त हुई , 3 दिन पैड पिता को जब पता चला कि उनके पिता का स्वर्गवास हो गया तब वो यह आये

मनु उनके आने के बाद ओर मुंशीजी का चौथा करने के बाद वह से पुनः अपने कॉलेज आ गया , उसके लिए कहा कुछ खत ओर 2 3 बड़े लिफाफे भी आये हुए थे।

1 महीने तक मुंशी जी के बेटे और बहू ने पूरा घर अच्छे से देखा मगर उन्हें वह कुछ भी नही मिला।

मुंशी जी ये मकान किसी ओर को बेच कर चले गए थे, उसका पैसा कहा था ये कोई नही जानता था।

इसलिए उनका बेटा जरूरी सामान लेकर अपने घर आ गया।

परीक्षा खत्म होने के बाद मनु को मुंशीजी द्वारा दिया गया गया वो लिफाफा ओर दूसरे अन्य लिफाफे खोलने का समय मिला।

पहले लिफाफे में से मुंशीजी द्वारा लिखी वसीयत थी जिसमे उन्होने मनु के नाम अपनी सारी संपत्ति कर दी थी, दूसरे लिफाफे में से मनु के लिए कुछ बैंक के दस्तवेज थे जिनमें उनका पैसा था, तीसरा लिफाफा कुछ पुरानी तसवीरो से भरा हुआ था और आखरी लिफाफे में मनु के लिए जीवन मे आगे बढ़ने के लिए ओर अपनी पोती गीतांजलि से शादी करने की इच्छा का वर्णन था।

अंतिम लिफाफा उन्होंने गीतांजलि के साथ ही उसे खोलने की इच्छा जाहिर की थी लेकिन मनु के डॉक्टर बनने के बाद।

4 साल के बाद मनु अब डॉक्टर मनोहर बन चुका था, मुंशी को आज के दिन सबसे ज्यादा याद किया ,गीतांजलि से मिलने उसके घर पहुँचा तो वहाँ उसके माता पिता से अलग रहने के बारे में पता चला।

सरकारी नौकरी की सबसे अच्छी वेबसाइट- JobSarkari.com

डॉक्टर मनोहर ने फ़ोन नंबर लेकर गीतांजलि से बात की , वह मनु से बात करके काफी खुश हुई और मनु से मिलने के लिए कहा।

मनु वही लिफाफा लेकर गीतांजलि के पास पहुँचा, ओर से बीते कल से आज तक कि सारी बातों के बारे बताया।

गीतांजलि अपने दादा के साथ हुए इस अन्याय के लिए माता पिता से अलग होकर रह रही थी और वो खुद नोकरी करके अपने आप को मजबूत बना लिया था।

लिफाफा खोलने के बाद उसमें से एक छोटा से खत था ओर ओर कुछ दस्तावेज थे जिसमे दोनों के नाम से एक घर था ओर खत में बस यही लिखा था कि डॉ. मनोहर यह भेंट आप दोनों के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी तरफ से.....मुंशी अमरनाथ

मनु बस यही सोच रहा था कि यह उज्जवल भविष्य तो उन्ही की देन थी जो उनके लिए ये कामना कर रहे थे।

शादी के 1 साल बाद दोनों पुनः उसी अनाथाश्रम में गए और वहां से एक बच्चा गोद लेकर उसका सपना साकार बनाने के लिए अपने घर ले आये जहाँ से मनु के डॉ मनोहर बनने का सफर शुरू हुआ था.....!

सरकारी नौकरी की सबसे अच्छी वेबसाइट- JobSarkari.com